

von Mathurānātha verfassten Schrift HALL 29.

मथुरासेतु (म० + सेतु) m. Titel einer Schrift MACK. Coll. I, 33.

मथुरेश (मथुरा + ईश) m. 1) Bein. Kṛṣṇa's ÇABDAR. im ÇKDr. — 2) N. pr. des Autors der Çabdaratnāvalī Verz. d. Oxf. H. 192, b, No. 439.

मथुरा f. = मथुरा DVIRUPAK. im ÇKDr.

मथ् (von 1. मथ्) adj. *agitatus*: मथ्वा रज्ज्वांसि RV. 1, 181, 5. Nach Śā. = प्रमाथनेन लोडनेन, also instr. von मथन्.

मथ् (wie eben) adj. *zerrend*: आश्वेनो मथ्वा नोमि नि वावतुः RV. 8, 46, 23.

मथ्य (wie eben) adj. *auszureiben*: उत्तमुकमथ्यं aus einem Feuerbrande zu reiben ÇAT. Br. 12, 4, 3. *auszuquirlen, was ausgequirlt wird*: अमृतं सिन्धुमध्यम् Bṛāg. P. 8, 12, 47. = सिन्धोर्मध्यनेन ज्ञातम् Schol. — Vgl. मन्थ्य.

1. मद्, मन्द्, मँदति, मदेमहि NAIKH. 3, 19. ममत्ति, ममहि, ममँतु (P. 6, 1, 192). ममँतन, ममँदस, ममँदन्; später (schon in den Brāhmaṇa) मँथ्यति Dhātup. 26, 99 (हृष्ये). P. 7, 3, 74. मँत्ति, मँत्स्व, मँत्सत्, मत्सति (RV. 8, 83, 7), मत्सय, अमत्सुस्, अमत्सत 3. pl., अमत्त. (अनु) अमादिषुस्, partic. मत्त P. 8, 2, 57. Vop. 26, 88. 89; मँदति, मँदते (Dhātup. 2, 12), अमन्दत्, अमन्दीत्, मन्दिषत् (Schol. zu P. 3, 1, 34. 4, 7. 94. 97), अमन्दिषुस्, (प्र) ममन्दत्, (अभिप्र) मन्दिषु, मन्दिष्ट, अमन्दिषाताम्, मन्दैद्यैः मन्दते = ज्वलति NAIKH. 1, 16. = अर्धति 3, 14. स्तुतिमोदस्वप्रगतिषु Dhātup. 2, 12. nach Andern auch कात्तौ und ज्ञात्रे. 1) act., selten med. (von मन्द् dagegen nur med.) *sich freuen, fröhlich sein, sich ergötzen, schwelgen in, sich wohlbe finden bei, sich gütlich thun an oder in Etwas* (instr., gen., loc., selten acc.); *sich in Etwas berauschen*: रुषिं येन वपे मदेम RV. 7, 1, 24. 4, 42, 10. राया मदेम तन्वाइ तना च 6, 49, 13. इया 7, 64, 3. अन्मीवास इ-ऊया मदेतः 3, 39, 3. दिवस्पृष्टिद्योर्वासा मदेम 5, 49, 5. यदिषो मदेयो गृहे 8, 26, 17. सुप्तेष्वेवा अर्धमा मदेम 6, 82, 14. मदेतो गीर्भिर्गृहे सुते सचो 3, 33, 10. प्रियास इत्ते नरो मदेम शरणे 7, 19, 8. मदेम शतकिमाः सुवीराः *glücklich sein* 6, 4, 8. तपो मदेम शरदश्च पूर्वीः *viele Tage und Jahre lang* 4, 16, 19. ममाहि सोममिन्द्र 10, 96, 13. 39, 2. ये अर्धेधर्मनुष्ठं अथो मदेति पक्षिपाः 5, 32, 1. किमु नो ममत्ति *warum wirst du nicht heiter?* 4, 21, 9. ममदश्च सोमैः 7, 24, 1. (आपः) यासु देवा ऊर्जं मदेति 7, 49, 4. मत्स्यन्धसः 1, 9, 1. मा ते रसस्य मत्सत ह्यपविर्नः 9, 83, 1. सुतेषु VĀLAKH. 6, 1. आर्दस्य र-से देवा अमत्सत 9, 14, 3. मत्स्यपायि ते मदेः 1, 173, 1. पोत्रादमत्त 2, 37, 4. यस्पेन्द्रो वृत्रहृते ममाद् 6, 47, 2. शुनहेत्रेषु मत्स्व 2, 41, 17. विवस्वतो मती 8, 6, 39. अन्धसः 4, 32, 14. VĀLAKH. 6, 1. VS. 8, 5. ÇĀKH. Çr. 8, 8, 1. — माथ्यति देवताः AIT. Br. 3, 38. 6, 11. अमाथ्यदिन्द्रः सोमेनात्प्यन्त्राह्णा धनैः ÇAT. Br. 13, 5, 18. अमाथ्यदिन्द्रः सोमेन दत्तिषाभिर्द्विजातयः MBH. 1, 4688 = 3, 8331 = 12, 928 = Bṛāg. P. 9, 2, 28 = MĀRK. P. 130, 16. म-घोनि माथ्यत्युरुसोमपीथे Bṛāg. P. 5, 13, 10. दष्टा माथ्यति मोदते ऽभिरमते प्रस्तीति विद्वानपि प्रत्यक्षाप्रचिपुत्रिका स्त्रियम् Spr. 633. RĀGA-TAR. 3, 338. दशत्रपानुकारेण यस्य माथ्यति भावकाः DAÇAR. 1, 2. गायन्माथ्यन् Bṛāg. P. 1, 6, 39. मृत्युमाथ्यति मूर्ध्नि PRAB. 77, 7. (विषदर्शनात्) सुव्यक्तं माथ्यति क्रौञ्चः KĀM. NITIS. 7, 12. माथ्यतः कलयतु चूतशिखरे केलीपिकाः पञ्चमम् ŚĀH. D. 79, 15. विदलत्कुन्दमाथ्यद्विरेफ Spr. 1928. येन माथ्येन तत्पिबेत् *berauscht werden* 3367. अमथ्यमाथ्यन्मातङ्ग KĀM. NITIS. 16, 33. न च माथ्ये-द्विषयोफोगरागात् 7, 35. अमन्दमाथ्यद्वदना *fröhlockend* ÇRUT. (Br.) 22. — उक्थेभिर्ये मन्दाना चिदा गिरा। आङ्घ्रैराविवांसतः RV. 7, 94, 11. अयो प्र-सर्गे यदमन्दिषाताम् 103, 4. मधः 2, 19, 2. स मन्दस्वा ह्यनु जोषम् 6, 23, 8.

अन्धसः 43, 4. मन्दमानः *freudig* 6, 67, 5. 1, 31, 11. 122, 13. अस्मिन्ना अथ सर्वने मन्दधैः 4, 16, 2. VĀLAKH. 4, 2. 8, 7, 14. — 2) namentlich zur Bezeichnung des *Freudenlebens* der Götter und Seligen: *selig sein*: यत्र देवसो मदेति RV. 8, 29, 7. 3, 6, 8. यत्र देवयो मदेति 4, 134, 5. (पितरः) यमेन ये संधमाद् मदेति 10, 14, 10. 17, 8. यत्र देवैः सधमाद् मदेम TBr. 3, 1, 1, 10 in Z. f. d. K. d. M. 7, 269. यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे RV. 8, 12, 17. — 3) das *Wallen* des Wassers wird als *Lustigkeit* bezeichnet: अपामूर्मिमदन्निव स्तोम इन्द्राजिरापते *lustig wie die Wasserwelle* RV. 8, 14, 10. मदेतोभिर्मार्जयते निर्हयिः शीतेन वापति *kochendes Wasser* TS. 6, 2, 9. 7. मदत्त्यापः ÇAT. Br. 3, 4, 3, 22. 10. 11. KĀTJ. Çr. 8, 1, 10. 2, 4, 7, 19. KAUC. 103. Ind. St. 9, 213. अपो देव्य ह्ययोषा विध्याद्यो दिव्य म-दत्त्या याः शंकरा धर्मधात्र्यः (so die neuere Ausg.) HARIV. 7794. — 4) *schlafen* (nach MAHIDH.): अमे त्वं सु जगृहि वपे सु मन्दिषोमहि VS. 4, 14. es würde genügen: *wir wollen es uns behaglich machen*. — 5) *trans. erfreuen, ergötzen, erheitern; berauschen*: स वामदह्या मदेः RV. 1, 80, 2. 84, 5. सोम इन्द्र ममाद् 7, 26, 1. 2. मत्तिं देवान् 9, 94, 5. 4, 31, 2. स ई ममाद् मदि कर्म कर्तवे *der Soma hat Indra begeistert zu der grossen That* 2, 22, 1. सुतस्त्वा ममतु 3, 31, 11. 7, 22, 2. 9, 96. 21. 10, 116, 3. यन्मा सोमसो ममदन् 4, 42, 6. 8, 84, 7. 1, 122, 3. पिवा सोममिन्द्र मन्दतु वा 7, 22, 1. 8, 1, 15. 6, 17, 3. 1, 134, 2. अमन्दन्मा स्तोमैः 163, 11. अवीवृधो अ-मृता अमन्दीत् 8, 69, 10. VĀLAKH. 2, 2. पुवतिर्ममन्नुषी RV. 5, 61, 9. — 6) *partic. मत्त* *freudigerregt, ausgelassen vor Freude* AK. 3, 2, 32. MBH. 8, 2043. *berauscht, trunken* (eig. und übertr.) AK. 3, 1, 23. 3, 4, 18, 114. H. 436. 310. HALĀJ. 2, 231. 334. AV. 6, 20, 1. M. 3, 34. 4, 207. 8, 67. 163. 9, 78. 11, 96. JĀN. 1, 162. 2, 32. MBH. 2, 2159. 14, 1739. fg. R. 3, 33, 36. Spr. 1117. 2090. 2618. 4681. KĀM. NITIS. 10, 34. KATHĀS. 28, 122. मतो ऽहे किल विललाप P. 3, 2, 115. VĀrtt. 1, Sch. वरप्रदानमती तविरसेन वलेन च। धनरत्नम-दाभ्यां च सुरापानमदेन च॥ सर्वैरेतैर्मदेमती MBH. 1, 7724. fg. ऐश्वर्यमद-मतांश्च मतान्मथमदेन च 12, 12530. पुंस्कोकिलश्चूतरसेन मत्तः प्रियामुखं चुम्बति R. 6, 14. प्रोतफुल्लमालतीमकारन्दसान्द्रमिदमत्तमधुकरं DHŪRTAS. in LA. 69, 4. ऐश्वर्य° ÇĀK. 66, 4. अर्थ° DAÇAR. in BENF. Chr. 193, 20. प्र-भा° (चन्द्र) Spr. 3866: विद्युद्वातिसमस्तकात्तिकलनामतास्तदा तोयदाः VARĀH. BRH. S. 27, 7. *berauscht, freudig erregt* (von Thieren aller Art während der Brunstzeit), *brünstig*: नाकालमताः खगपन्नगाश्च मृगद्विपाः शैलमृगाश्च लोके Spr. 4379. क्रौञ्च R. 1, 2, 15. बर्हिष् MBH. 1, 7388. को-किल PAÑĀR. 1, 7, 29. सारंग DAÇ. 1, 17. यस्या मता निशि श्वानः श्वनिशं श्वनिशा च सा TRIK. 1, 1, 105. insbes. von Elephanten AK. 2, 8, 2, 4. 3, 4, 18, 112. H. 1220. HALĀJ. 2, 65. MBH. 1, 6005. 7671. 12, 4259. नित्य° R. 1, 6, 24. 3, 32, 46. Spr. 1233. 1638. 2091—2093. RAGH. 12, 93. — *caus. मादयति, मादयते* (तृत्तियोगे Dhātup. 33, 31), मदैयति (कृष्यले-पनयोः Dhātup. 19, 54. गर्वे ग्लेपने Vop. मद्यति [*berauscht*] नाचं संपातिः। मद्यति [*versetzt in Noth*] शत्रुं प्रूरः DURGĀD. im ÇKDr.), मन्दयति: अमी-मदत्त, मादयै RV. 1, 167, 1. 6, 19, 6. 22, 3. 60, 13. 1) *act. ergötzen, er-heitern, berauschen*: ते वा मदा मादयन्तु RV. 7, 23, 5. 9, 84, 3. 80, 5. ता-न्ह राजा मद्यां चकार AIT. Br. 6, 1. पर्वस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः RV. 9, 67, 16. इमं कामं मन्दया गोभिर्यैः *erfreue, befrichtige* 3, 30, 20. दि-ग्धविद्वामिव मादय *berausche, betäube* ÇAT. Br. 14, 9, 8. उताहो त्वो-स्तुतयो मादयति MBH. 3, 10678. गन्धेन मादयतीति गन्धमादनम् MALLIN.